॥ श्री राघवो विजयते॥ * **प्राक् वक्तव्य** *

ध्यायामि परमंब्रह्म कौसल्योत्संगलालितं। रामं नीलांबुजश्यामं राघवं धूरिधूसरं॥

समस्त श्री राघवजू के उपासक बहनों, भाइयों को नमो राघवाय। यह सूचित करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

आज की भागदौड़ वाली परिस्थिति में मनुष्य का जीवन एक यन्त्र बनकर नीरस और सुस्त बनता जा रहा है और साथ ही साथ उसके लिए समय की भी बहुत कमी होती जा रही है। उसे आध्यात्मिक शान्ति के साथ स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि भी चाहिए जो भगवान् श्रीराम राघव सरकार की उपासना के बिना संभव नहीं है, क्योंकि भगवान् राम वर्तमान की प्रत्येक चुनौती के शाश्वत समाधान हैं।

अतः थोड़े समय में सामान्य गृहस्थ जिस प्रकार से शास्त्र विधि के अनुसार बालरूप राम श्री राघव सरकार की सेवा करके शान्ति, सुख, स्वास्थ्य और समृद्धि प्राप्त कर सकता है वह विधि इस पुस्तक में अति संक्षेप में निर्दिष्ट की जा रही है।

प्रत्येक गृहस्थ के घर में बालरूप राघव या बालगोपाल की सेवा होनी चाहिए और प्रभु को स्नान, चन्दन, धूप, दीपक, नैवेद्य अर्पण करके आरती करनी चाहिए। इससे सबका सर्वविद मंगल हो जाता है, जैसा की श्री रामायण जी में गोस्वामी तुलसीदास जी भी आज्ञा करते हैं।

तुमहिं निवेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं॥ कर नित करहिं रामपद पूजा। राम भरोस हृदय नहिं दूजा॥

- श्री रामचरितमानस २-१२९-२-४

यद्यपि मैं संपूर्ण वैदिक मन्त्रों से ही श्री राघव सेवा करता हूँ किन्तु यहाँ सर्व सामान्य के लिए पौराणिक मन्त्रों का निर्देश किया जा रहा है। आइये हमारी इस पद्धति के अनुसार श्री राघव सेवा कीजिये।

> - इति निर्दिशति राघवीयो जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य, चित्रकूट धाम

* जागरण *

कौं कौसल्यायै नमः।

कौसल्यासु प्रजाराम पूर्वा संध्या प्रवर्तते । उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥ उत्तिष्ठोतिष्ठ भो राम उत्तिष्ठ भरताय्रजम् । उत्तिष्ठ राघवोदार पितरौ संप्रमोदय ॥

* मङ्गलनीराजना *

ॐ अग्निर्देवता वातोदेवता सुर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवोदेवता रुद्रोदेवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता। ॐ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्यो अजायत श्रोत्राद वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि रजायत।

* श्री गणेश पूजनम् *

श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

गजाननं भूत गणाधिसेवितं कपित्थजम्बुफलचारुभक्षणम् । उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

वैदिकों को गणपतयथर्वशीर्ष से अभिषेक करना चाहिए और सामान्य गृहस्थ को द्वादश नाम स्तोत्र से अभिषेक करना चाहिए जो यहाँ निर्दिष्ट है।

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् । भक्तावासं स्मरेन्नित्य मायुष्कामार्थं सिद्धये ॥ प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् । तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्तं चतुर्थकम् ॥ लंबोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च । सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥ नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् । एकादशं गणपितं द्वादशं तु गजाननम् ॥ द्वदाशैतानिनामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः । न च विघ्नं भवेत्तस्य सर्वसिद्धिकरः प्रभुः ॥ विद्यार्थी लभते विद्यां, धनार्थी लभते धनम् । पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभिते गितम् ॥ जपेत् गणपितं स्तोत्रं षड्भिर्माषैः फलं लभेत् ।संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥ अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः । गन्धाक्षतपृष्पाणि समर्पयामि ।

* श्री शिवपूजनम् *

नमः शशाङ्क शेखराय । नमः साम्बशिवाय ।

वैदिकों के लिए रुद्रसूक्त से शिवाभिषेक तथा सर्वसामान्य को श्री गोस्वामी तुलसीदास जी विरचित रुद्राष्ट्रक से शिवाभिषेक करना चाहिए जो यहाँ लिखा जा रहा है।

रुदाष्ट्रक

नमामीशमीशान् निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ॥ निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥ निराकारमोन्कारमूलं तुरीयं। गिराग्यान गोतीतमीशं गिरीशं॥ करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥ तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीरं। मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्॥ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा । लसद्भाल् बालेन्द् कण्ठे भुजङ्गा ॥ चलत्कुण्डलं भ्रूत्रिनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ॥ मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शङ्करं सर्वनाथभजामि ॥ प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं॥ त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगव्यं॥ कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्द दाता प्रारी॥ चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥ न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ॥ न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ न जानामि योगं जपं नैव पूजा। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं॥ जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥ रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये। ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति॥ नमः शशाङ्क शेखराय। गन्धाक्षत्पुष्पाणि समर्पयामि॥ श्री साम्बशिवाय नम: ।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधं । त्रिजन्मपापसंघारमेकबिल्वम् शिवार्पणम् ॥

बिल्वपत्रं समर्पयामि । श्री सांबशिवाय नमः ।

* श्री शालग्रामपूजनम् *

श्री शालग्राम जी का चरणामृत बनाने के ले लिए नौ वस्तुओं की अपेक्षा होती है। ताम्रपात्र, षड्क्षरमंत्र का यन्त्र, चन्दन, शंख, मंत्रोच्चारण, घंटानाद, तुलसी तथा गोमतीचक्र। वैदिकों के लिए पुरुषसुक्त द्वारा अभिषेक तथा सर्वसामान्य के लिए अपने गुरुमंत्र का जप करते हुए अभिषेक करना चाहिए। अभिषेक के अंत में यह मंत्र बोलना चाहिए।

नम्स्त्वनताय सहस्रमूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटि युगधारिणे नमः॥ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्दाढयं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यतां॥ चन्दनं समर्पयामि। श्रीशालग्रामाय नमः॥ श्रीयं (कुमकुम) समर्पयामि। श्री शालग्रामाय नमः॥ तुलसी श्री सखि शिवे पापहारिणी पुण्यदे। नमस्ते नादनुते नमो नारयणप्रिये॥ तुलसीदलं समर्पयामि। श्री शालग्रामाय नमः॥ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यतां॥ पुष्पाणि समर्पयामि। श्री शालग्रामाय नमः॥

* श्री हनुमत् पूजनम् *

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरीष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये॥ स्नानं चन्दनं पुष्पं समर्पयामि।

इसके अनंतर हनुमान चालीसा का पाठ अवश्य करना चाहिए।

* श्री राघव सेवा *

स्नानम्

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यगे । स्मरेत् कल्पतरोर्मूले रत्नसिन्घासनं शुभम् ॥

तन्मध्ये अष्टदलं पद्मं नानारत्नैश्चवेष्टितं । स्मरेन्मध्ये दाशरिथं सहस्रादित्य तेजसम् ॥

पितुरङ्कगतं रामिन्द्रनीलमणिप्रभम् । कोमलाङ्गं विशालाक्षं विद्युत वर्णाम्बरावृतं ॥

भानुकोति प्रतिकाशिकरीटेन विराजितम् । रत्नग्रैवेय केयूरं रत्नकुण्डल मण्डितम् ॥

रत्नकन्कणमञ्जीरकटिसूत्रैरलङकृतं । श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोप शोभितम् ॥

दिव्यरत्नासमायुक्त मुद्रिकाभिरलन्कृतं ।राघवं द्विभुजम् बालं राममीषत स्मिताननम् ॥

- श्री रामस्तवराज १० से १५ तक

अभिषेकं समर्पयामि । भगवते श्री राघवाय नमो नमः । तिलकं पुष्पं श्रृंगारं च समर्पयामि ।

श्रृंगार करके श्री राघवज् को सिंघासन पर पधारकर यह स्तुति करनी चाहिए।

स्तुति

दोहा: प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन शोभा निरखि। मुनिवर परम प्रवीण, जोरि पाणि अस्तुति करत॥ नमामि भक्तवत्सलं । कृपाल् शीलकोमलम् ॥ भजामि ते पदाम्बुजं। अकामिनां स्वधामदम्॥ निकामश्याम सुन्दरं । भवाम्बुनाथामन्दरं ॥ प्रफुल्लकञ्जलोचनं । मदादिदोषमोचनं ॥१॥ प्रलम्बबाहुविक्रमम् । प्रभोऽप्रमेयवैभवं ॥ निषङ्गचापसायकं । धरंत्रिलोकनायकं ॥ दिनेशवंशमण्डनं । महेशचापखण्डनं ॥ मुनिन्द्रसंतरंजनं । सुरारिवृन्दभंजनं ॥२॥ मनोजवैरिवन्दितं । अजादिदेवसेवितं ॥ विशुद्धबोध विग्रहं। समस्तद्षणापहं॥ नमामि इन्दिरापतिं। सुखाकरं सतांगतिम्॥ भजे सशक्तिसानुजं । शचीपति प्रियानुजं ॥३॥ त्वदन्घ्रिम्ल ये नराः । भजन्तिहीन मत्सराः ॥ पतन्ति नो भवार्णवे। वितर्कवीचि संकुले॥ विविक्त वासिनः सदा। भजंति मुक्तये मुदा॥

निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयान्ति ते गतिं स्वकाम् ॥४॥ त्वमेकमद्भुतम् प्रभुं । निरीहमीशवर विभुं ॥ जगद्गुरुं च शाश्वतम् । तुरीयमेवकेवलं ॥ भजामि भाववल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥ स्वभक्तकल्पपादपम् । समस्तसेव्यमन्वहम् ॥५॥ अनूप रूपभूपतिं । नतोऽहमुर्विजापतिम् ॥ प्रसीद मे नमामि ते । पदाञ्जभक्ति देहि मे ॥ पठन्ति ये स्तवं त्विदम् । नरादरेण ते पदम् ॥ व्रजन्ति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ॥६॥

दोहा: विनती करि मुनि नाइ सिर, कह कर जोरि बहोरि। चरन सरोरुह नाथ जिन, कबहुँ तजै मित मोरि॥

-- श्री रामचरितमानस ३/४

धूपम्: ॐ ब्राह्मणोअस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः । उरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भायागुं शूद्रो अजायत ॥ धूपमाघ्रापयामि । भगवते श्री राघवाय नमो नमः ॥

दीपम्: ॐ चन्द्रमामनसोजातश्वक्षोः सूर्यो अजायत श्रोत्राद वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि रजायत। दीपं दर्शयामि। भगवते श्री राघवाय नमो नमः॥

नैवेद्यम: ॐ नाभ्या आसीदन्तिरक्ष गुं शिष्णोर् द्यौः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान् अकल्पयन ।

विशेष: भगवान् के नैवेद्य सामग्री में शुद्धता का ध्यान रखें एवं तुलसीदल पधराकर घंटी बजा कर प्रेम से भोह लगायें और नीचे के मंत्र पढ़ें।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महिवर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतं । ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छिति । तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥ अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापान समायुक्त पचाम्यन्नं चतुर्विघं ॥ तुलसीदलमात्रेण जलस्या चुलुकेन च । विक्रीणीते स्वमात्मानम् भक्तार्थं भक्तवत्सलः ॥

- ॐ प्राणाय स्वाहा ।
- ॐ अपानाय स्वाहा।
- ॐ व्यानाय स्वाहा ।
- ॐ उदानाय स्वाहा।
- ॐ समानाय स्वाहा।
- ॐ दाशरथाय विदाहे। सीतावल्लभाय धीमिह तन्नो रामः प्रचोदयात्॥ (इसी श्रीराम गायत्री मंत्र का नैवेद्य कराते समय कम से कम ११ बार जप करें)

आचमनम्

श्री रामाय नमः, श्री रामभद्राय नमः, श्री रामचन्द्राय नमः।

इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन कराएं।

करोद्धर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि । प्रोक्षणं समर्पयामि । (भगवान् को रुमाल दिखाएँ) मुखवासार्थे लौगं समर्पयामि ।

* आरार्तिक्यं *

- ॐ अग्निर्देवता वातोदेवता सुर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवोदेवता रुद्रोदेवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता।
- ॐ चन्द्रमामनसोजातश्वक्षोः सूर्यो अजायत श्रोत्राद वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।
- ॐ अग्निज्योंतिज्योंतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा
- ॐ अग्निर्वचोज्योति वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चः ज्योतिः वर्चः स्वाहा ।

विशेष: श्री राघवजू को वार के गृह के रंग के अनुसार वस्त्र धारण करवाने चाहियें। यथा - सोमवार को श्वेत मंगलवार को अरुण (लाल), बुद्धवार को हरित (हरा), गुरुवार को पीत (पीला), शुक्रवार को श्वेत, शनिवार को नीला, रविवार को अरुण (गुलाबी)।

आरती में वार के अनुसार पीताम्बरधारिन के स्थान पर उस रंग का नाम जोड़ कर बोलना चाहिए यथा सोमवार को श्वेताम्बरधारिन।

* आरती *

वन्दे श्रीरामं प्रभु वन्दे श्रीरामं। म्निजनमनोभिरामं नवमेघश्यामं । जय राम जय श्री राम ॥ पूर्णब्रह्मनिष्कामं पूरित जनकामं । प्रभु पूरित जनकामं ॥ निज जनशोकविरामं व्रीडितशतकामं। जय राम जय श्री राम॥ तरुण तमाल मनोहर रघुवर दनुजारे । प्रभु रघुवर दनुजारे ॥ तूणशरासन शरधर दीनं पाहि हरे। जय राम जय श्री राम॥ समरनिहत दशकन्धर सेवक भयहारिन्। प्रभु सेवक भयहारिन्॥ भव पाथोनिधि मंदर दण्डकवनचारिन्। जय राम जय श्री राम॥ विधिमुखजलजविलोचन पीतांबरधारिन्। प्रभु पीतंबरधारिन॥ कोसलपुरजनरंजन हनुमतसुखकारिन। जय राम जय श्री राम॥ भरत चकोर निशेषं रिपुसूदनबन्धुं । प्रभु रिपुसूदनबन्धुं ॥ शरणागत सुरधेनुं नौमिकृपासिन्धुं । जय राम जय श्री राम ॥ जय जय भुवन विमोहन जय करुणासिन्धो । प्रभु जय करुणासिन्धो ॥ जय सीतावर सुन्दर जय लक्षमणबन्धो । जय राम जय श्री राम ॥ दर्शय निजमुख कमलं भवसागर सेतो । प्रभु भवसागर सेतो ॥ हर गिरिधर भवभारं दिनकरकुल केतो। जय राम जय श्री राम॥ वन्दे श्रीरामं प्रभु वन्दे श्रीरामं। मुनिजनमनोभिरामं नवमेघश्यामं। जय राम जय श्री राम - ३॥ अनया नीराजनया भगवान् श्री राघवः प्रियतां न मम। मंगलं कोसलेन्द्राय राघवेन्द्राय मंगलं । मंगलं राजराजाय रामभद्राय मंगलं ॥ शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं राघवोपरि । अंगलग्नं मनुष्याणां पातकानां शतं हरेत ॥ आरती के चारों ओर शंख से जल फेर कर अपने ऊपर जल छिड़कें साथ ही उपस्थित जनों के ऊपर भी। मंगलं ह्याप्तकामाय पूर्णकामाय मंगलं । मंगलं जानकीशाय रामचन्द्राय मंगलं ॥ मंगलं श्री मुकुन्दाय कोसल्याक्रोडवर्तिने । प्रपन्न परिजाताय राघवाय च मंगलं ॥ मंगलं आञ्जनेयाय वानरेशाय मंगलं । मंगलं रामदूताय वायुपुत्राय मंगलं ॥

मंगलं नीलकण्ठाय मंगलं शूलपाणये। मंगलं राघवेशाय माधवेशाय मंगलं॥ मंगलं मंगलं मंगलं॥

श्री रामकृष्णदेव की जय हो। श्री शालग्राम भगवान् की जय हो। श्री सीताराम भगवान् की जय हो। श्री राधागोविन्द भगवान् की जय हो। जगद्गुरु आद्य रामानंदाचार्य भगवान् की जय हो। अवध सरयूधाम की जय हो। चित्रकूट कामद मंदाकिनी की जय हो। प्रातः काल श्रृंगार समर्चन नीराजना की जय हो। जय जय श्री सीताराम।

स्तुति

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी। हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी। लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी। भूषन बनमाला नयन बिशाला शोभासिंधु खरारी॥ कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहिविधि करऊँ अनंता। माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता। करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहिं गावहिं श्रुति संता। सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता। ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै। मम उदार सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मतिथिर न रहै। उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै। कही कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै। माता पुनि बोली सो मित डोली ताजहुतात यह रूपा। कीजै शिश्लीला अतिप्रियशीला यह सुख परम अनुपा। स्नि बचन स्जाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा। यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।

दोहा: बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार। निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपार॥

- श्री रामचरितमानस १/१७२

सियावर रामचंद्र की जय, श्री अयोध्याराम जी लला की जय, श्री जनकपुर जनकलली की जय, श्री पवनसुत हनुमान जी की जय, श्री उमापित महादेव की जय, श्री वृन्दावन कृष्णबलदाऊ की जय, श्री गोस्वामी तुलसीदास जी की जय, बोलो भाई सब संतन्ह की जय। जय जय श्री सीताराम।

नीलांबुजश्यामल कोमलाङ्गम्, सीतसमारोपितवामभागम्। पाणौ महासायाकाचारुचापम्, नमामि रामं रघुवंशनाथम ॥ नीलाम्बुद श्यामल देहकान्तिं, राधासमालन्कृतवामभागं। वन्शीधरं यष्टिधरं मुकुन्दं, नमामि कृष्णं यद्वंशनाथं॥ यदि हरोऽसि तदा हर पातकम्, यदि भवोऽसि तदा करु में शिवम्। यदो भवोऽसि तदा भव भीतिहा, शमय दुःखमिदं यदि शंकरः॥ अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं, दनुजवानकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यं। सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिवरद्तं वातजातं नमामि॥ कन्दावदातं जनपारिजातं, काकानुगं कल्पितकाकपक्षं। श्रीराघवंबाणधनुर्दधानं वक्रालकं बालकमाश्रायामि॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन. तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ नाना स्गन्धपुष्पाढयो यथा कालसमुद्भवः। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृह्यतां रघुसत्तमम ॥ मन्त्र पुष्पांजलिं समर्पयामि । भग्वान् श्री राघवाय नमो नमः । श्री सीतानाथ समारम्भां श्री रामानन्दार्य मध्यमां। अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे श्री गुरुपरम्परां॥ श्री गुरुवे नमः श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। नीचे के तीन श्लोकों को पढ़ते हुए तीन बार दंडवत करना चाहिए। हे राघव महाबाहो रामराजीवलोचन।

पुष्पाञ्जलि:

मम प्रार्थयमानस्य भव लोचन गोचरः ॥१॥ पाहि पाहि महाराज पाहि राजीवलोचन । पाहि मां जानकीनाथ घोरसंसारसागरात् ॥२॥ पाहि मां करुणासिन्धो पाहि मां भक्तवत्सलः । पाहि मां पापिनं राम कलेः कलिमलापह ॥३॥

कीर्तन:

हम तो हमारे राघवजू के राघवजू हमारे हैं। इष्ट देव मम बालक रामा। राघवजू हमारे हैं। शोभा वपुष कोटि शत कामा। राघवजू हमारे हैं। मन क्रम बचन अगोचर जोई। राघवजू हमारे हैं। दशरथ अजिर बिचर प्रभु सोई। राघवजू हमारे हैं। करतल बाण धनुष अति सोहा। राघवजू हमारे हैं। वेखत रूप चराचर मोहा। राघवजू हमारे हैं। बंदौ बालरूप सोई रामू। राघवजू हमारे हैं। सब सिधि सुलभ जपत जिसि नामू। राघवजू हमारे हैं। मंगल भवन अमंगल हारी। राघवजू हमारे हैं। द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी। राघवजू हमारे हैं। द्रवउ सो गुरुवर सदन बिहारी। राघवजू हमारे हैं। द्रवउ सो गुरुवर सदन बिहारी। राघवजू हमारे हैं। द्रवउ सो गुरुवर सदन बिहारी। राघवजू हमारे हैं। वेदिहा: जय जय राघव राम शिशु नखसिख लितत उदार। जय गुरुवर के प्राणधन जय मुन्ना सरकार॥

बोलो मुन्ना सरकार की जय हो। नख सिख सुभग श्रृंगार की जय हो। बोलो राघव सरकार की जय हो। जय जय श्री सीताराम।

चरणामृत लेने का मन्त्र

अकालमृत्युहरणं सर्वबाधाविनाशनम्। श्री रामपादामृतं पीत्वा श्रीरामभक्त्यै प्रकल्पते॥

> धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, गोमाता, गंगामाता, भारतमाता की जय हो।

> > ॥जय जय श्री सीताराम॥